IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

भूमि उपयोग को प्रभावित करने वाले तत्वों का अध्ययन

रागिनी गुप्ता[1] व डॉ. सुशीला द्विवेदी[2]
शोधार्थी, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, म.प्र.[1]
प्राध्यापक, शासकीय महाविद्यालय रायपुरकर्चुलिया, रीवा, म.प्र.[2]

शोध–सारांशः

मनुष्य एक क्रियाशील प्राणी है। वह प्रकृति द्वारा प्रदत्त सभी तत्वों का अपने हित में स्वेच्छानुसार संसाधन के रूप में प्रयुक्त करता है, जिनमें से एक भूमि संसाधन है। भूमि वस्तुतः पृथ्वी पर विकसित महाद्वीपीय धरातल का वह भाग है, जिसमें मनुष्य न सिर्फ निवास करता, अपितु उसकी समस्त सामाजिक–आर्थिक क्रियायें इस पृष्ठीय भाग में ही संचालित होती है। उच्चावच की दृष्टि इसके निम्नांकित 3 वर्ग हैं–1. पर्वतीय भूमि, 2. पठारी भूमि, 3. मैदानी भूमि।

उपर्युक्त भूमि के तीनों प्रकारों में पर्वतीय भूमि की ऊँचाई एवं उच्चावचीय विषमतायें सबसे अधिक होती हैं, जबकि मैदानी भूमि समतल–सपाट एवं समुद्र की सतह से 600' फीट से कम ऊँचाई वाले होते हैं। उक्त बिन्दुओं को इस शोध पत्र में उल्लेख करने का प्रयास है।

मुख्य शब्द :– भूमि, उपयोग, प्रभावित, तत्वों,उच्चावच, धरातल, संसाधन आदि।

संदर्भ स्रोत :–

[1]. मीनू चौरसिया, रीवा जिला के नईगढ़ी विकासखण्ड के कृषि का सूक्ष्म स्तरीय नियोजन, शोध ग्रन्थ, अ.प्र.सि.वि.वि. रीवा, 2014

[2]. रामपाल एवं बृजनाथ श्रीवास्तव, व्यावहारिक भूगोल, किताबघर, आचार्य नगर कानपुर, 1978, पृ. 210–211

[3]. जिला जनगणना पुस्तिका जिला रीवा, 1991 एवं 2001, विश्लेषणात्मक विवरण

[4]. कार्यालय स. अधीक्षक भू–अभिलेख–तहसील हनुमना से प्राप्त जानकारी वर्ष–2022

[5]. क्षेत्रीय सर्वेक्षण वर्ष 2022 पर आधरित